सोने से पहले की एक अजीबो गरीब दुआ और आदाब

मुफ़ती अहमद खानपुरी दब

१. वुज़ू कर के सोना.

२. सीधी करवट पर सीधे हाथ की हथेली सीधे गाल के निचे रख केर सोना.

३. दूसरे अज़कार और दुआओं के अलावह हे दुआ सब से आखिर में पढना, इस के बाद कोई बातचीत या काम नहीं करना.

फज़ीलत- अगर नींद में ही मौत आ गए तो इस्लाम और ईमान पर खतमह होगा. और अगर सुबह को बेदार हुवा, तो भलाई को पा लेगा.

अजीबो गरीब दुआ

हदीस 814. तरजुमा- हज़रत बरा बिन आज़िब रदी फरमाते हं कि नबीय्ये करीम صلى الله عليه وسلم जब सोने के लिये अपने बिस्तर पर तशरीफ लाते तो अपनी दाहनी करवट पर लेटते और ये दुआ पढते थे. दूसरी रिवायत में उन्हों ने ये बात भी बतलाई है कि नबीय्ये करीम صلى الله عليه وسلم ने बाकायदा उनको मुखातब बनाकर फरमाया जब तुम अपनी

खाबगाह (बेड रूम) में आओ, अपने बिस्तर पर पोहचो यानी सोने का इरादा करो, तो पेहला काम तो ये करो कि जैसा नमाज़ के लिये वुज़ू करते हे ऐसा वुज़ू करो और दाहनी करवट पर लेट जाओ फिर ये दुआ पढो*
(ये एक लंबी दुआ है जो कि नबीय्ये करीम ﷺ ने सोते वकत पढने के लिये बतलाई है, इस दुआ के अजीबो गरीब अलफाज़ हे, और इसमें तवक्कुल और तफवीज़ की अजीब शान पाई जाती है)

दुआ

"अलल्लाहुम्म असलमतु नफसी इलयक, व वज्जहतु वजही इलयक, व फव्वझ्तु अमरी इलयक, व अलजअतु झहरी इलयक, रगबतन व रहबतन इलयक,ला मलजा व ला मंजा मिंक इल्ला इलयक, आमंतु बिकताबिकल लझी अंझलत, व बिनब्यियक लझी अर्सलत".

तरजुमा- ए अल्लाह! मैंने अपने आपको तरे हवाले कर दिया, मैंने अपनी जान को तेरे ताबे बना दिया और मैंने अपना चेहरा और अपना रूख तेरी तरफ कर दिया और अपनी पीठ कौ मेंने तेरी पनाह में दे दिया, तुझ से उम्मीदे वाबस्ता हे और तेरा डर और खोफ भी है, ए अल्लाह!

पनाह और नजात की जगह तेरे अलावा कोई और नही है, ए अल्लाह! जो किताब तू ने उतारी है इस पर में ईमान लाया, और जिस नबी को तुं ने भेजा इस पर भी मेरा ईमान है.

हुज़ूर ﷺ ने फरमाया आखरी कलाम तुम्हारी ज़बान का यही होना चाहिये (अगर ईसी हालत में सो गए और मौत आये, तो ईमान पर मौत आयेगी).

हदीस के इस्लाही मज़ामीन (उर्दु नयी एडिशन पेज/102,103 से लिप्यांतर)